Q. No एडम स्मिथ का शास्त्रीय अर्थशास्त्र (Classical Economics) में योगदान : आलोचनात्मक परीक्षण

Adam Smith (1723–1790) को आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक (Father of Modern Economics) कहा जाता है। उन्होंने 1776 ई. में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक An Inquiry into the Nature and Causes of the Wealth of Nations का प्रकाशन किया, जिसने अर्थशास्त्र को एक स्वतंत्र एवं वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित किया। एडम स्मिथ से पहले आर्थिक विचारों पर मुख्य रूप से वाणिज्यवाद (Mercantilism) का प्रभाव था, जो किसी राष्ट्र की समृद्धि को सोना-चाँदी के संग्रह से जोड़ता था। एडम स्मिथ ने इस विचार का विरोध करते हुए कहा कि किसी राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति उसके उत्पादन, श्रम, पूँजी तथा प्राकृतिक संसाधनों के कुशल उपयोग में निहित होती है।

उन्होंने आर्थिक स्वतंत्रता, मुक्त प्रतियोगिता, निजी उद्यम, श्रम-विभाजन तथा सीमित सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन किया। उनके विचारों ने शास्त्रीय अर्थशास्त्र की नींव रखी तथा आगे चलकर डेविड रिकार्डो, माल्थस और जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे अर्थशास्त्रियों को प्रभावित किया।

एडम स्मिथ के प्रमुख योगदान

1. राष्ट्र की संपत्ति का सिद्धांत (Theory of Wealth of Nations)

एडम स्मिथ का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने राष्ट्र की संपत्ति की नई अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार किसी देश की समृद्धि का आधार सोना-चाँदी का संग्रह नहीं, बल्कि वस्तुओं एवं सेवाओं का अधिक उत्पादन है।

उन्होंने कहा कि यदि किसी देश के संसाधनों का कुशल उपयोग किया जाए, उत्पादन बढ़ाया जाए तथा व्यापार को प्रोत्साहित किया जाए, तो राष्ट्रीय आय और लोगों का जीवन स्तर दोनों ऊँचे होंगे।

महत्त्व

उत्पादन में वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय आय बढ़ती है।

रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

देश आर्थिक रूप से मजबूत बनता है।

2. श्रम-विभाजन का सिद्धांत (Theory of Division of Labour)

एडम स्मिथ ने श्रम-विभाजन को आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना। उनके अनुसार जब किसी उत्पादन प्रक्रिया को छोटे-छोटे कार्यों में बाँट दिया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति केवल एक ही कार्य करता है, तो उसकी दक्षता बढ़ जाती है।

उन्होंने पिन निर्माण उद्योग का उदाहरण देकर बताया कि श्रम-विभाजन से उत्पादन कई गुना बढ़ सकता है।

श्रम-विभाजन के लाभ

श्रमिकों की कार्यकुशलता बढ़ती है।

समय की बचत होती है।

उत्पादन लागत कम होती है।

मशीनों एवं नई तकनीकों का विकास होता है।

बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव होता है।

श्रम-विभाजन की सीमाएँ

कार्य नीरस एवं एकरूप हो जाता है।

श्रमिक केवल एक कार्य तक सीमित रह जाता है।

बेरोजगारी की संभावना बढ़ सकती है।

मानसिक विकास बाधित हो सकता है।

3. अदृश्य हाथ का सिद्धांत (Invisible Hand Theory)

एडम स्मिथ का सबसे प्रसिद्ध सिद्धांत अदृश्य हाथ (Invisible Hand) है।

इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी लाभ के लिए कार्य करता है, लेकिन प्रतिस्पर्धा और बाजार व्यवस्था के कारण उसका कार्य समाज और राष्ट्र के हित में भी योगदान देता है।

उदाहरण के लिए एक व्यापारी लाभ कमाने के उद्देश्य से अच्छी गुणवत्ता की वस्तुएँ बनाता है, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर वस्तुएँ उचित मूल्य पर प्राप्त होती हैं।

4. मुक्त व्यापार एवं मुक्त बाजार (Free Trade and Free Market)

एडम स्मिथ ने मुक्त व्यापार तथा मुक्त प्रतियोगिता का समर्थन किया।

उनके अनुसार सरकार को व्यापार पर अनावश्यक नियंत्रण नहीं लगाना चाहिए। यदि बाजार को स्वतंत्र छोड़ दिया जाए तो माँग और पूर्ति के आधार पर वस्तुओं के मूल्य निर्धारित होंगे तथा संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग होगा।

मुक्त व्यापार के लाभ

प्रतियोगिता बढ़ती है।

वस्तुओं की गुणवत्ता सुधरती है।

कीमतें कम होती हैं।

उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प मिलते हैं।

आर्थिक विकास तेज होता है।

5. लेसे-फेयर नीति (Laissez-Faire Policy)

एडम स्मिथ ने सरकार के न्यूनतम हस्तक्षेप की नीति का समर्थन किया।

उनके अनुसार सरकार के मुख्य कार्य केवल निम्न होने चाहिए–

देश की रक्षा करना।

कानून एवं न्याय व्यवस्था बनाए रखना।

सार्वजनिक सुविधाओं (सड़क, पुल, शिक्षा आदि) का विकास करना।

उन्होंने माना कि सरकार का अत्यधिक हस्तक्षेप आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

6. श्रम-मूल्य सिद्धांत (Labour Theory of Value)

एडम स्मिथ के अनुसार किसी वस्तु का वास्तविक मूल्य उसके उत्पादन में लगाए गए श्रम की मात्रा पर निर्भर करता है।

हालाँकि उन्होंने यह भी माना कि विकसित अर्थव्यवस्था में वस्तु का मूल्य मजदूरी, लाभ तथा लगान जैसे तत्वों से भी प्रभावित होता है।

यह सिद्धांत आगे चलकर डेविड रिकार्डो तथा कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों का आधार बना।

7. पूँजी संचय का सिद्धांत (Capital Accumulation)

एडम स्मिथ ने पूँजी संचय को आर्थिक विकास का आधार माना।

उनके अनुसार–

बचत → निवेश → पूँजी निर्माण → उत्पादन वृद्धि → रोजगार वृद्धि → राष्ट्रीय आय में वृद्धि → आर्थिक विकास

इस प्रकार उन्होंने बचत और निवेश के महत्व पर विशेष बल दिया।

8. पूर्ण लाभ का सिद्धांत (Theory of Absolute Advantage)

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में एडम स्मिथ ने पूर्ण लाभ का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

इसके अनुसार प्रत्येक देश को उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करना चाहिए जिनके उत्पादन में उसे अन्य देशों की तुलना में कम लागत और अधिक दक्षता प्राप्त हो।

इससे–

अंतरराष्ट्रीय व्यापार बढ़ता है।

उत्पादन में वृद्धि होती है।

सभी देशों को लाभ मिलता है।

9. आर्थिक स्वतंत्रता का सिद्धांत

एडम स्मिथ का विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय चुनने, उत्पादन करने तथा व्यापार करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

उनके अनुसार आर्थिक स्वतंत्रता से–

नवाचार (Innovation) बढ़ता है।

उद्यमिता विकसित होती है।

रोजगार बढ़ता है।

आर्थिक प्रगति होती है।

एडम स्मिथ के योगदान का आलोचनात्मक परीक्षण (Critical Examination)

गुण (Merits)

- अर्थशास्त्र को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।
- आधुनिक शास्त्रीय अर्थशास्त्र की नींव रखी।
- श्रम-विभाजन के महत्व को स्पष्ट किया।
- मुक्त प्रतियोगिता एवं मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया।
- आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन किया।
- पूँजी निर्माण को आर्थिक विकास का आधार बताया।

- उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने पर विशेष बल दिया।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- निजी उद्यम एवं बाजार व्यवस्था को प्रोत्साहित किया।
- उनके विचार आज भी विश्व की अनेक अर्थव्यवस्थाओं में उपयोगी माने जाते हैं।

दोष (Criticisms)

- उन्होंने पूर्ण प्रतियोगिता की कल्पना की, जबकि वास्तविक जीवन में एकाधिकार और अपूर्ण प्रतियोगिता अधिक देखने को मिलती है।
- आय एवं संपत्ति की असमानता की समस्या पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।
- उन्होंने सरकार की भूमिका को बहुत सीमित माना, जबकि आधुनिक अर्थव्यवस्था में सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक है।
- श्रम-मूल्य सिद्धांत आधुनिक मूल्य निर्धारण को पूरी तरह स्पष्ट नहीं करता।
- सामाजिक कल्याण, गरीबी तथा बेरोजगारी जैसी समस्याओं पर पर्याप्त विचार नहीं किया।
- बाजार विफलता (Market Failure) और बाह्य प्रभाव (Externalities) की समस्या की उपेक्षा की।
- पर्यावरण संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर विशेष ध्यान नहीं दिया।
- उनका "स्वार्थ" का सिद्धांत नैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से सभी परिस्थितियों में उपयुक्त नहीं माना जाता।
- विकसित एवं विकासशील देशों की परिस्थितियाँ अलग होती हैं, इसलिए उनके सभी सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किए जा सकते।

निष्कर्ष

एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र को एक नई दिशा प्रदान की और शास्त्रीय अर्थशास्त्र की मजबूत नींव रखी। उनके श्रम-विभाजन, अदृश्य हाथ, मुक्त व्यापार, आर्थिक स्वतंत्रता, पूँजी संचय तथा पूर्ण लाभ जैसे सिद्धांत आज भी आर्थिक विचारधारा के आधार माने जाते हैं। यद्यपि उनके सिद्धांतों की अनेक आलोचनाएँ हुई हैं और आधुनिक अर्थशास्त्र ने उनमें कई संशोधन किए हैं, फिर भी उनका योगदान अमूल्य है। इसी कारण एडम स्मिथ को "आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक" तथा शास्त्रीय अर्थशास्त्र का प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है।